11/09/2020

- B. A. (Part - II)

Food Problem in India :

खाद्य उत्पादन एवं जनसंख्या के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है। माल्थस का विचार था कि खाद्यान्न की तुलना में जनसंख्या वृद्धि तेजी से होती है। भारत वर्ष में 19वीं शताब्दी तक खाद्यान्न के उत्पादन और जनसंख्या के मध्य लगभग संतुलन की स्थिति थी, परन्तु 20वीं शताब्दी के आरम्भ से ही जनसंख्या खाद्यान्न की तुलना में अधिक बढ़ने लगी और खाद्य समस्या की स्थिति उत्पन्न हो गई।

भारत में खाद्य-समस्या के चार पहलू हैं :→

1. मात्रात्मक पहलू :— इसका सम्बन्ध खाद्यान्नों की कुल माँग और कुल पूर्ति से है। इस रूप में खाद्य-समस्या एक अल्पकालीन संकट नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिन अभाव की दशा मानी जाती है। खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाकर ही माँग और पूर्ति में आवश्यक संतुलन स्थापित किया जा सकता है।

2. गुणात्मक पहलू :→ अधिकांश देशवासियों को असन्तुलित भोजन मिलता है। हमारे भोजन में दूध, फल, माँस

आदि रक्षात्मक पदार्थों का अभाव रहता है, अतः लोगों को पर्याप्त मात्रा में भोजन तत्व नहीं मिल पाते हैं। यही कारण है कि साधारण व्यक्ति की कार्यक्षमता कम होती है और वह दुर्बल रहता है। अतः खाद्य-समस्या का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सर्वसाधारण को संतुलित और पौष्टिक भोजन मिलना चाहिए।

3. प्रशासनिक पहलू :- इसका संबंध खाद्यान्नों के वितरण पक्ष से है, न कि उत्पादन पक्ष से। उचित एवं प्रभावपूर्ण सरकारी खाद्य-नीति ही खाद्य-समस्या के इस रूप का निराकरण कर सकती है।

4. आर्थिक पहलू :→ भारत में अनेक बार यह भी देखने में आया है कि महँगे अनाज को खरीदने के लिए लोगों के पास आवश्यक क्रय-शक्ति का अभाव रहता है। अतः अनाज के अभाव के स्थान पर 'मुद्रा का अभाव' पाया जाता है। इस पहलू का सम्बन्ध सामान्य जनता की गरीबी तथा खाद्यान्नों के ऊँचे भाव से होता है।

भारत में खाद्यान्न अभाव के कारण :

भारत में खाद्यान्न अभाव के लिए

निम्नांकित कारण उत्तरदायी हैं :-
1. जनसंख्या में वृद्धि।
2. कृषि के पुराने तरीके।
3. प्राकृतिक प्रकोप।
4. व्यापारिक कृषि का विस्तार।
5. घटती कृषि भूमि।
6. दोषपूर्ण सरकारी नीति।
7. उत्पादकता का निम्न स्तर।
8. निर्धनता और बेरोजगारी।
9. व्यापारियों की दूषित मनोवृत्ति।

भारत में खाद्य समस्या हल करने के निम्नांकित प्रयास भारत सरकार द्वारा किए गए हैं! →
1. खाद्य विभाग की स्थापना।
2. अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन।
3. कृषि व ग्रामीण विकास को उच्च प्राथमिकता।
4. अनाज का आयात।
5. सुरक्षित भण्डार।
6. सार्वजनिक वितरण प्रणाली।
7. भारतीय खाद्य निगम की स्थापना।
8. केन्द्रीय भण्डागार निगम।
9. अधिक उपज देने वाले किस्मों को अपनाया जाना।
10. भूमि तथा जल संरक्षण कार्यक्रम।
11. अन्न बचाओ अभियान।
12. उर्वरकों का प्रयोग।
13. अच्छे बीजों का उत्पादन एवं वितरण।

Scanned with CamScanner

14. कृषि - उद्योग निगम की स्थापना।
15. राष्ट्रीय कृषि आयोग की स्थापना।

क्रमशः